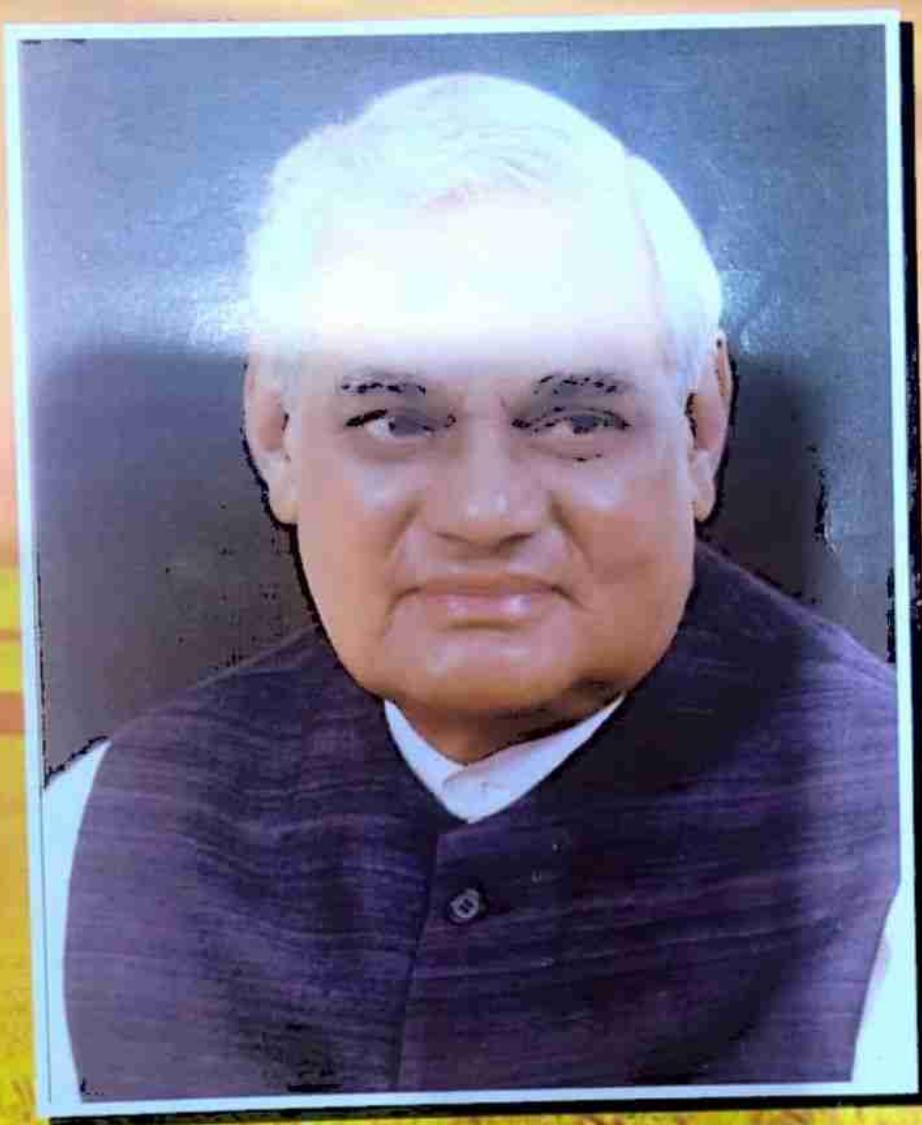


ISSN - 2279-0519

An International Refereed
Quarterly Research Journal

वर्ष - 17
अंक - 1



द्रज नान्दनी (त्रैमासिक)

E-mail: jpsharma0169@gmail.com

सरकारी मण्डल:

डॉ. बनवारी लाल शर्मा

डॉ. वी. के. शर्मा

डॉ. रोशन लाल जी

सम्पादक मण्डल:

डॉ. जगदीश शर्मा, डॉ. लिट् (प्रधान सम्पादक)

डॉ. वी. के. सारस्वत

डॉ. डी.एन. त्रिपाठी

प्रो. एम.एम. अग्रवाल

सह सम्पादक :

डॉ. कमल कौशिक, डॉ. मंजू बघेल

परामर्श-दात्री समिति:

नीलमणि शर्मा

डॉ. प्रणव शर्मा

डॉ. नटवर नागर

डॉ. वी. के. जिंदल

डॉ. धर्मेन्द्र अग्रवाल

डॉ. ए. के. त्रिवेदी, प्राचार्य राजाजी का. ऑफ एजू., चेन्नई

आचार्य डॉ. बाबू लाल मीना, भरतपुर

डॉ. भुवनेश चौधरी

डॉ. भगत सिंह

चित्रांकन:

श्री राकेश कुमार शर्मा (चित्रकला अध्यापक)

विषय विशेषज्ञ :

प्रो. अनीता त्यागी (संस्कृत)

डॉ. नरेश कुमार (शिक्षा शास्त्र)

प्रो. मंगला रानी (हिन्दी)

डॉ. सुरचना त्रिवेदी (संस्कृत)

डॉ. के. के. वर्मा (अर्थशास्त्र)

संस्थापक:

स्व. डॉ. अमियचन्द्र शास्त्री 'सुधेन्दु'

- अध्यक्ष: ब्रज चेतना समिति (पं.सं. 982/2005-06)

मणिकुटीरम्, कमला नगर, बाईपास (बाह्यपथ)

कोसीकला- 281403 मो० 9411891236

स्वत्त्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक डॉ. जगदीश प्रसाद शर्मा,
रूक्मिणी विहार, मथुरा, से प्रकाशित एवं
मित्तल कम्प्यूटर प्रिंटर्स, बृन्दाबन रोड, मथुरा से मुद्रित

ओ३म्
“विद्याऽमृतमशनुते”

ब्रज नन्दिनी

ISSN. 2279-0519

Three Month Refereed
International Research Journal

वर्ष- 17 अंक्त: 1

जुलाई 2019 से सितम्बर 2019 ई.

मूल्य: एक प्रति 50 रुपये वार्षिक 200 रुपये
आजम सदस्यता-2000/- (भारत में) 2000/- (विदेश में)

www.vrijnandini.org

मंगलाचरणम्

त्वामग्ने! पुष्करादध्यर्थवा निरमन्थत।

मूर्धनो विश्वस्य वाधत।।

सामवेद- 1/1 प्रथम अध्याय/नवां मन्त्र

पदार्थः-

त्वाम्= तुम, अग्ने= हे परमेश्वर, पुष्करादधि=हृदयाकाश
में अर्थवा= महान् अहिंसक योगी, निरमन्थत= प्रातः करता
था (देखता है) मूर्धन्= मूर्त पदार्थों के आधार भूत,
विश्वस्य= संसार के (मध्य में), वाधत= मेधावीजन।

संस्कृत पदानुवादः:

हृदीक्षते प्रभुं योगी, -डॉ. अमियचन्द्र शास्त्री

मेधावी लोक-मध्यगम्।

नमस्कुर्वे तमेवाऽहं

सर्वव्यापकमीश्वरम्।।

भावार्थ- हे परमेश्वर! महान् अहिंसा व्रती योगी हुझे
हृदयाकाश

में देखते अथवा प्राप्त करते हैं और मेधावी जन
हुझे मूर्त पदार्थों के आधार भूत संसार के मध्य में
देखते हैं। -महर्षि स्वामी दयानन्दभाष्य

विषयानुक्रम

सम्पादकीय

Economic thoughts of Gandhiji

आज तो यमुना को बोलने दो

निरक्षरता एक अभिशाप

एकात्ममानववाद के प्रणेता पंडीनदयाल

संस्कृत वाड़मय में निबद्ध

सामाजिक चिन्तन एवं विश्वभूदय

कबीर और रहस्यवाद

स्थामी विवेकानन्द के अनशिक्षासंबंधी

विचारों की प्रासंगिकता

राजयोग की श्रेष्ठता

पुराणों का हिन्दसाहित्य पर प्रभाव

लोकरंगमंच के प्रहसन

वैदिककालीन राजनीतिक संस्था सभा का एक अध्ययन

संस्कृत का वैश्विकस्वरूप

संस्कृत वाड़मय में व्रज

अटल बिहारी बाजपेयी के

गद्यसाहित्य में राष्ट्रीय चेतना

अटलबिहारी बाजपेयी के साहित्यों

राष्ट्रीय चेतना के स्वर

Philosophy and spiritual vision

of Shri Aurobindo

हिन्दी की अन्तर्राष्ट्रीयता

पाठ्यक्रम का बालकों के व्यक्तित्व

विकास में योगदान

वर्तमानसदी की चुनौतियां और गांधी दर्शन

की प्रासंगिकता

अथर्ववेद में मणिचिकित्सा

मानवजीवनेपुराणानां महत्वम्

अथर्ववेद में वर्णित रोग ओषधि और

मणि का प्रभाव

आंग्लसाहित्य का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव

हिन्दी की विश्वजनीनता

लैनिनामृतम् के आधार पर रूस का प्राकृतिक स्वरूप

प्रधानसम्पादक

Smt. Renu Upadhyay

कुहू बजाज

डॉ. एम.एम. अग्रवाल

डॉ. मंजू बघेल

डॉ. राजय शर्मा

डॉ. ममता शर्मा

कैलाश कौशिक

डॉ. वी. के. जिन्दल

डॉ. सीमा

डॉ. नटवर नागर

डॉ. बबीता जैन

डॉ. प्रदीप त्रिपाठी

डॉ. सोमकान्त त्रिपाठी

डॉ. जगदीश प्रसाद शर्मा

डॉ. कमल कौशिक

Dr. Sanjay Sharma

डॉ. दिवाकर चौधे

डॉ. वी.के. सारस्वत

डॉ. प्रवीण अग्रवाल

डॉ. सुशील कुमार शुक्ल

प्रो. डॉ. धर्मानन्दराऊत

डॉ. सुधांशु शेखर पण्डा

कुमार विनायक

चन्द्रभान यादव

डॉ. ब्रज नन्दन सिंह

मानवजीवने पुराणानां महत्त्वम्

- प्रो० डॉ. धर्मानन्द राउत

लाल बहादुर शस्त्री केन्द्रिय संस्कृत विद्या पीठ नई दिल्ली प्रतिपासविषयमाधारिकृत्य पुराणम् एवं आचक्षते-
 सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
 वंशानुचरितं चैव पुराणं पंतचलक्षम्॥
पुराणानां प्रतिपाद्यविषया:- पुराणेषु प्रधान्येन देवानाम् उपासना व्यपदिश्यते। प्रायेण ब्रह्मविष्णुमहेशादिदेवानां कालीलक्ष्मी सरस्वती प्रभृतम्- देवीनां च सर्वोत्कृष्टा प्रतिपादितास्ति। एते सु सृष्टे : पलयस्य च वर्णनम्, देवर्षिराजवंशनिरूपणम् मनोः मन्वन्तरस्य च चपतिष्ठापनम् प्रसिद्ध तीर्थस्थानानां तीर्थयात्रादीनां च वर्णनम्, व्रतजपोपवासादीनां चानुष्ठानानम्, धर्मदर्शन रानीतिसदाचारा दिविषायाणां विवेचनम्, व्याकरणकाव्यज्योतिषशास्त्रायुर्वेदादिशास्त्रीय विविधविषयाणां मंत्रयंत्रतंत्रकलाविज्ञानविषयैः सह पारिवारिक सामाजिका-र्थिकराजनैतिक विषयाणामपि सम्यक् वर्णनं कृतमस्ति। पुराणानां राष्ट्रपेम विख्यातमस्ति। एषां मातृभूमिभक्तिरनुपमेया। भारतवसुन्धरां प्रशंसांतो न सामान्याः जनाः अपितु दिवौकसाः किल गीतकानि गायन्ति। यथोक्तं विष्णुपुराणे- गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे। स्वर्गापवर्गास्पदहेतुभूते भवन्ति भूयो मनुजाः सुरत्वात्॥ पुराणानि भारतीयजीवनं सम्यक् प्रभावयन्ति। पुराणेषु तद् विधानं वर्तते येन समाजस्य

पुराणानि भारतीयायाः संस्कृते : सभ्यतायाः भारतीयजन जीवनस्य च प्रदीपाः सन्ति। ऐतैरेव भारतीय संस्कृतिः सभ्यता च याथातथ्येन अवगन्तुं षणक्येते। पुराणेषु भारतीयानां पुरातन व्यावहारिको ज्ञाननिधिः मानवजीवनस्य च परमं सत्यं विराजेते। सम्प्रत्यपि भारतीय धर्मस्य अत्रत्यमानवजीवनस्य मूलाधारः पुराणसाहित्यमेव। अत एव भारतीयवाङ्मये पुराणानां विशेष समादरोऽस्ति। पुराणानां विषये भागवतमेवं भणति-

"इतिहासपुराणं च पंचमो वेद उच्यते। विषयेऽस्मिन् वायुपराणम् एवं ब्रबीति यत् चतुर्वेदनिशारदोऽपि पुराणज्ञानविहीनो बुधो विचक्षणपदं प्राप्तुं नार्हति-

"यो विद्याच्चतुरो वेदान् सांडगोपनिषदो द्विजः। न चेत् पुराणं स विद्यान्तैव च स्याद् विचक्षणः॥ वेदानाम् अर्थज्ञानाय पुराणानाम् अनेकास्ति- इतिहासपुराणाम्यां वेदं समुपबृंहयेत्। विभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रहरित्यति॥

पुराणशब्दार्थविमर्शः: पुराणशब्दो बुधैर्बहुधा व्याकृतः 1. पुराभवं पुराणम्-पुरा+अन, तुट् च। 2. पुराणम्-आख्यानम्। 3. यस्मात् पुरा अनति तदिदं पुराणम् 4. पुरार्थेषु आनयतीति प्रराणम्। 5. पुरा परम्परां वक्ति पुराणं तेन वैस्मृतम्। 6. विश्वसृष्टेरितिहासः पुराणम्। 7. पुराभवं पुराणं स्माद् धर्मार्थं काम मोक्षदम्। श्रेयसे यद् मानवानां सर्वाभ्युदयःकारकम्॥

पुराणं पंचलक्षणम् - विष्णुपुराणं